

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन



प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय
आबू पर्वत (राजस्थान)



प्रकाशक :

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय
आबू पर्वत - 307501 (राजस्थान)

प्रथम संस्करण :

जून 2008

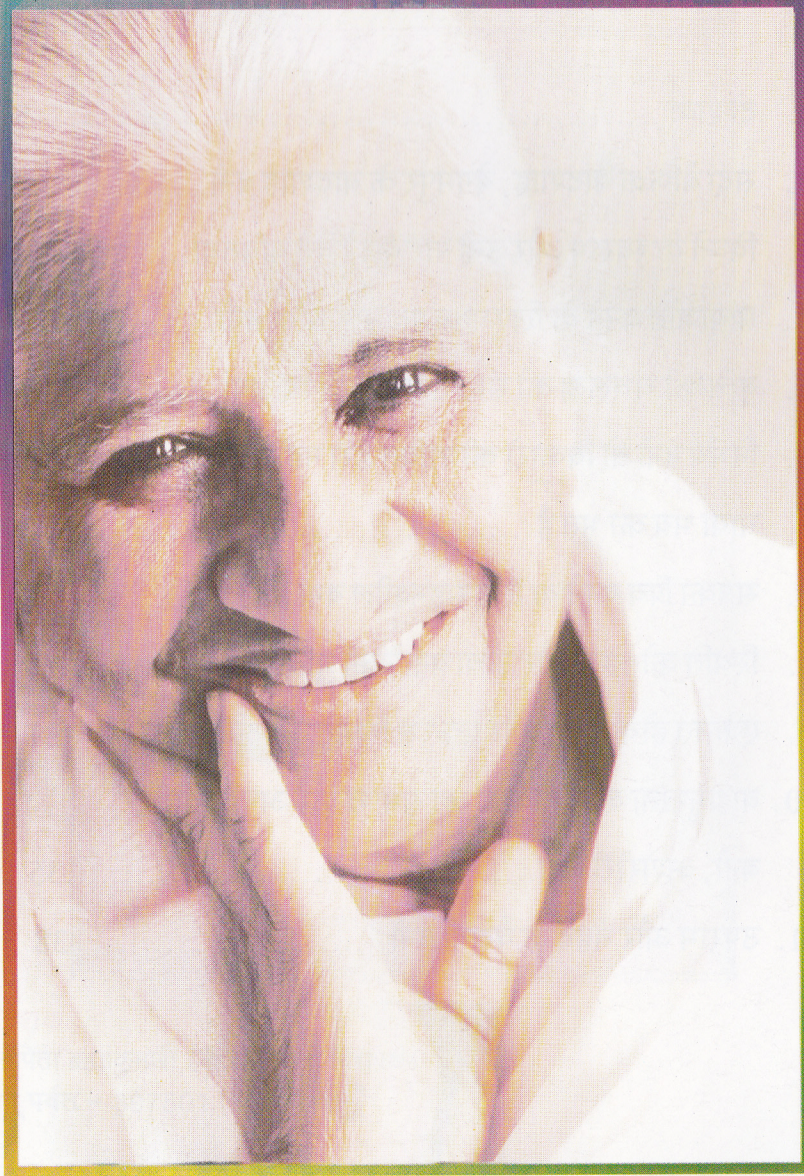
मुद्रक :

ओम् शान्ति प्रिन्टिंग प्रेस
शान्तिवन, तलहटी
आबूरोड(राजस्थान) - 307510

अमृत सूची

1. दो शब्द5
2. सदा बेफिक्र बादशाह, बेगमपुर के बादशाह बनो7
3. विघ्नों के स्वरूप और उन्हें पार करने की युक्तियां10
4. मायाजीत बनने के लिए पवन पूत (महावीर) बनो15
5. वृत्ति की चंचलता को समाप्त करने की विधियां18
6. निर्भय बनो तो विकारों की शक्ति डरा नहीं सकती,
माया भय का भूत है22
7. सबका प्रिय बनने के लिए सहनशील बनो25
8. स्थिति को श्रेष्ठ और ऊंचा बनाने की युक्तियां29
9. एकमत होकर रहो और एकरस स्थिति बनाओ31
10. बाह्यमुखता के वातावरण को समाप्त कर अर्न्तमुखी
बनो, अशरीरी बनो35
11. उपराम और बेहद के वैरागी बनो38





एकनामी और एकानमी वाले बनो।



दो शब्द

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की मुख्य प्रशासिका (जनवरी 1969 से अगस्त 2007 तक) दादी प्रकाशमणि जी ने अपनी दिव्य धारणामूर्त जीवन द्वारा, अपनी सरल सौम्य मधुर वाणी द्वारा ब्रह्मा वत्सों को प्रोत्साहित करके उन्हें आध्यात्मिक मार्ग पर निरन्तर आगे बढ़ाया, पुरुषार्थ की सरल विधियां बताईं, अनेक मीठी मधुर शिक्षाओं से हर एक का श्रंगार किया।

दादी जी के समीप सानिध्य में आने से उनके असीम प्यार का अनुभव होता, दादी जी की रूहानियत और रहम से भरपूर मीठी दृष्टि, उनकी निश्छल मुस्कान और मधुर बोल हर एक में नया उमंग, उत्साह भर देते। दादी जी के सामने जो भी आता उसे अपने सभी प्रश्नों का हल मिल जाता, वह सन्तुष्ट और प्रसन्न होकर दिल ही दिल में दादी जी को दुआयें देता। दादी जी ने मुख से शिक्षायें बहुत कम दीं, उनका जीवन ही शिक्षा का स्वरूप था, सदा हर कर्म करके सिखाया। सबको अपने से आगे रखकर दिल से रिगार्ड दिया। हर एक की विशेषता को देखकर उसे सेवा में लगाया। जब भी कोई दादी जी की महिमा करता तो दादी जी सदा यही कहती - यह बाबा का यज्ञ है, करनकरावनहार बाबा है, बाबा ही हमारे साथ है, हमारे कंधों पर वही बैठा है, वही करा रहा है, हम सब तो बाबा की कठपुतलियां हैं। उनका अंग-अंग शीतल और सुगन्धित था। कोई भूल करके भी आता तो भी वह क्षमा की मूर्ति बनकर उसे कहती अच्छा अब से इस बात को भुला दो, आगे के लिए नहीं करना। दादी जी परमात्मा पिता की हर श्रीमत का कदम कदम पर खुद भी पालन करती और दूसरों को भी श्रीमत पर चलने की प्रेरणा देती। उनकी पालना, मधुर शिक्षायें हर एक ब्रह्मा वत्स के रग-रग में समाई हुई हैं। यहाँ उनके प्रथम पुण्य स्मृति दिवस पर कुछ अमृत वचन प्रकाशित करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है।

यह अमृत वचन आने वाले नये पुराने सभी ईश्वरीय विद्यार्थियों के पुरुषार्थ को तीव्र बनाने में बहुत-बहुत सहायक सिद्ध होंगे। इसी शुभ कामना के साथ,

बी.के. जानकी



देह-अभिमान में रहना अर्थात् धरती पर चलना,
आत्मस्थिति में रहना अर्थात् उड़ना।



सदा बेफिक्र बादशाह, बेगमपुर के बादशाह बनो

1. हमें बाबा ने बेफिक्र, बेगमपुर का बादशाह बनाया है। इतने बड़े कार्य-व्यवहार की अनेक बातें हर मिनट में आती जाती हैं, फिक्र तो रहना चाहिए ना! परन्तु बाबा का मुझे यह सचमुच पर्सनल वरदान है कि हमें न कोई भी फिक्र होता, न कोई चिन्ता होती, न कोई चिन्तन चलता – इसका कारण है कि हम निमित्त हैं। फिकरात करने वाला करे, मैं क्यों करूँ?
2. कोई भी बात है तो प्लान करो, राय करो – क्या करें, कैसे करें लेकिन चिन्ता नहीं करो। कहा जाता चिन्ता चिन्ता के बराबर है। हम कभी चिन्ता नहीं करती। फिक्र से फारिग कींदा स्वामी सद्गुरु। तो फिक्र वह करे हम क्यों करें! संगमयुग पर हर एक बेफिक्र बादशाह बनो।
3. बापदादा के दिलतख्त पर बैठ जाओ तो किसी चीज़ का फिक्र नहीं होगा। जो खिलावे, वो खाना है, जो पहनावे वो पहनना है, अगर उसे हमें बेगरी पार्ट में रखना होगा तो भी हम राज़ी, अगर हमें राजकुमारों की तरह पालता है तो भी हम राज़ी।
4. बाबा भोलानाथ है, भण्डारी उसकी है, भण्डारी में क्या है, वह खुद जानता है। वह खिलाता है, हम खाते हैं। गरीब निवाज़ बाबा के अनेक गरीब बच्चों की पाई-पाई यज्ञ में सफल हो रही है। हमें बाबा ने बेफिक्र बादशाह बनाया है, जितनी वह आज्ञा करेगा, उतना करेंगे।
5. हमारा एक ही मन्त्र है – जी हज़ूर हम हाज़िर हैं। वह हज़ूर है, जो हुक्म करे। बाकी चिन्ता क्या करूँ! तो फिर आप लोग क्यों चिन्ता करते? किस बात की फिकरात करते? अगर वह सूखी रोटी खिलायेगा तो भी खायेंगे, कहेगा 36 प्रकार का खाओ तो भी खायेंगे। हमारे लिये दोनों बराबर हैं। जो खिलावे, जहाँ जैसे सुलावे... सबमें सन्तुष्टमणी रहो। खुश रहो, खुशी की खुराक खाओ और खिलाओ।

6. आपस में संगठन में रहते, जो कभी थोड़ा बहुत भाव-स्वभाव आता, थोड़ा चिन्तन चलता – इसकी भी विधि बनाओ। जब आपस में नहीं बनती तो आप कहते यह बुरा, वह कहता यह बुरा, अच्छा यह भी बुरा, वह भी बुरा... लेकिन कोई तो अच्छाई होगी या नहीं? तो जो जिसमें अच्छाई है, उसे देखकर बात कर लो तो बुराई आपेही खत्म हो जायेगी।

7. शुभ भावना से शुभ कामनायें पूरी होती हैं। संगठन में आपने कोई बात कही, मैंने नहीं मानी तो आपको बुरा लगा कि यह मेरी बात नहीं मानता। अच्छा कोई बात नहीं मानता, ज़िद्द करता आप वह बात छोड़ दो, आपेही ठण्डा हो जायेगा।

8. जो बात राइट है, उसे बताना हमारा कर्तव्य है। आगे वाले का काम है मानना, फिर भी कोई नहीं मानता है, ज़िद्द करता है तो वह उसका विकर्म बनता, हम उसके विकर्म के साथी नहीं बनें। कोई रांग बात दूसरे की है मेरी नहीं है, लेकिन मैंने कह दिया अच्छा भैया ओम् शान्ति, सॉरी... तो वह बात खत्म हो गई। जो टेम्परेचर चढ़ा था वह स्वतः ही डाउन हो जायेगा। मैंने सॉरी किया तो इसमें मेरी साड़ी तो मैली नहीं हो गई! सॉरी करने से कम से कम दूसरे का दिमाग तो ठण्डा हो गया।

9. श्रीमत के फरमान पर चलना - यह हमारा धर्म है। तो श्रीमत क्या कहती है—यह सोचो। क्या श्रीमत कहती है कि आपस में लड़ो, मूड ऑफ करो, मनमत पर चलो? श्रीमत ने कहा है क्या कि किसी से लगाव रखो, ऐसा वैसा व्यवहार करो... तो श्रीमत क्या है, उसे नोट करो और हर कदम श्रीमत प्रमाण उठाओ तो बाबा की दुआयें मिलेंगी।

10. श्रीमत के अन्दर सब धारणायें आती हैं। श्रीमत कहती है रोज़ सवेरे उठो, ज्ञान-स्नान करो, मर्यादाओं में चलो, पवित्र रहो, ब्राह्मण कुल की लाज रखो। दूसरों की सर्विस करो, सभी को बाबा का परिचय दो, सेवा

करो.. यह सब श्रीमत है। तो बाबा और श्रीमत सदा याद रहे।

11. पुराने संस्कारों को खत्म करने के लिए एकाग्रता का अभ्यास करो, अशरीरी बनो। यही अभ्यास कमी-कमज़ोरियों को खत्म करेगा। तो दिल से रियलाइज़ करके अपनी कमज़ोरी को कम से कम 100 बार लिखो और बाबा से माफ़ी लो, इससे देह-अभिमान का संस्कार खत्म हो जायेगा। जो भी ईश्वरीय मर्यादा के विपरीत बातें होती हैं, आपस में हंसना, बहलना, टी.वी. देखना... इन सब बातों को अब समाप्त कर योग की कमाई करो।



12. हमारे मुख से सदैव रत्न निकलने चाहिए, कभी कुवचन नहीं निकलें। कईयों के मुख पर गाली झट आ जाती है, गुस्से में चमाट भी मार देते, जिससे दुःख देते और दुःख लेते, यह बहुत-बहुत खराब धंधा है। क्रोधमुक्त होने का तो सभी पक्का वायदा करो। दृष्टि और वृत्ति को सदा पावन बनाओ।

विघ्नों के स्वरूप और विघ्नों को पार करने की युक्तियां

1. विघ्न आना इस संसार का नियम है। विघ्नों को विनाश करना मुझ असंसारी का धर्म है। संसार के नियम को खुद का नियम नहीं समझना। संसार की रीति है टक्कर देना, विघ्न डालना, ग्लानि करना, गाली देना, विरोध करना, वैरी बनना... लेकिन हमें संसार की रीति को, संसार के नियम को खुद का नियम नहीं बनाना है। मैं तो असंसारी हूँ क्योंकि मैं अलौकिक हूँ, इस संसार से न्यारा और निराला हूँ।
2. आज मेरी कोई महिमा करेंगे, कल गाली देंगे। आगे बढ़ता देखेंगे तो ईर्ष्या करेंगे, आगे नहीं बढ़ेंगे तो ग्लानि करेंगे! हसूंगी तो कहेंगे चंचल है, चुप रहूंगी तो कहेंगे बुद्धू है।
3. अगर सेन्टर पर सेवा देंगे तो कहेंगे इसे तो सारा दिन सेन्टर ही याद रहता, घरबार भूल गया है। अगर सेन्टर पर सेवा नहीं करेंगे तो कहेंगे इसका यज्ञ से स्नेह नहीं है।
4. अगर अपना तन-मन-धन सफल करेंगे तो कहेंगे कुछ तो फ्रूचर का भी सोचना चाहिए। अगर नहीं करेंगे तो कहेंगे मनहूस है। अगर ज्ञान के नशे में सब कुछ भूले हुए होंगे तो कहेंगे इतना नशा थोड़ेही होना चाहिए। अगर नशा नहीं है तो कहेंगे इसको तो बाबा पर निश्चय ही नहीं है।
5. अगर सिम्पल रहते तो कहेंगे यह सन्यासी बन गया, अगर ठीक-ठाक रहते तो कहेंगे इसे वैराग्य ही नहीं आया।
6. अगर सीरियस रहते तो कहेंगे यह तो बहुत सीरियस रहता! अगर हल्के होकर रहते तो कहेंगे यह मर्यादा नहीं सीखा है। अगर किसी का कहना मानते हैं तो कहेंगे यह तो इन्हीं की मानता है, अगर नहीं मानते हैं तो कहेंगे यह तो मनमौजी है।
7. ऐसे अनेक प्रकार की बातें रोज़ दिनचर्या में आती हैं। मैं उसमें क्या



करूँ! अगर एक की सुनते तो दूसरी को एतराज़ होता, बड़ी की सुनते तो छोटी नाराज़ होती। छोटी की सुनते तो बड़ी डाँटती। आखिर भी मैं क्या करूँ! ऐसे अनेक सवाल सभी के हैं, जो सदा ही चले आते हैं।

इन विघ्नों को पार करने की युक्तियां

1. कहा जाता जीवन एक नईया है, इसको ठीक रीति से चलाना होशियार मांझी (खिवैया) का काम है। सिन्धी में कहावत है.... चक्की का पुर नीचे का उठाओ तो भी भारी, ऊपर का उठाओ तो भी भारी। न उठाओ तो पीसूँ।
2. इसके लिए पहली बात हमेशा समझो – जितना रुस्तम बनेंगे उतना रावण रुस्तम बनेगा। रावण कभी कुदृष्टि लायेगा, कभी संस्कारों की टक्कर में लायेगा, कभी ईर्ष्या में, कभी मेरे-पन में, कभी जोश में, उसकी 100 बातें सामने आयेगी लेकिन हमें उसे सेन्ट परसेन्ट जीतना है। अब यहाँ चाहिए हमारी बारीक सूक्ष्म से सूक्ष्म महीन बुद्धि। उस बुद्धि के आधार से श्रीमत को सदा सामने रखो और उसी पर अपने आपको चलाओ।
3. बाबा की पहली श्रीमत है तुम्हें पावन सतोप्रधान ज़रूर बनना है। अपनी सत-बुद्धि से, अपनी शीतलता की शक्ति से, सत श्रीमत से, बुद्धि साफ होने से, हम सभी बातों का राइट वे में सामना कर सकते हैं।
4. जब भी कोई विघ्न आवे तो श्रीमत के आधार पर सत-असत की तुलना करके फिर जज करो। सत्व गुण में जो कभी रजो तमो के अवगुण प्रवेश होते हैं, उन्हें पहले पीछे हटाओ फिर स्वयं के संस्कार जो बहुत मेहनत कराते हैं, वह ठण्डे हो जायेंगे।
5. हमें बाबा ने लक्ष्य दिया है कि तुम्हें दैवीगुणों से सम्पन्न देवता बनना है। तो सवेरे से रात तक देखो मैं अपने को देवताई लाइन में लिये जा रहा हूँ? देवता-पन की क्वालिफिकेशन इमर्ज करो।



6. देवता माना सत्व गुण। सत्व गुण आते हैं श्रीमत से। पहले तो अपने को शीतल करो। शीतल बनने से आवेश, जोश के संस्कार शीतल हो जायेंगे, फिर नशा रखो हम किस अथॉरिटी के बच्चे हैं। जब यह नशा है तो बुद्धि सदैव ऊपर में रहती है। देह, देह के व्यवहार तरफ नहीं जाती।

7. अपने को सदैव वेरी-वेरी लक्की समझो। लक्की समझने से विघ्नों का सहज ही विनाश कर सकेंगे। पता नहीं मेरी तकदीर में क्या है! ऐसा संकल्प उठाना माना संशय। मालूम नहीं - चल सकूंगा या नहीं, जाता हूँ ब्राह्मण परिवार में तो यह टक्कर आता, दुनिया में जाता हूँ तो यह विघ्न आते। आखिर क्या करूँ? यह संकल्प भी संशय की निशानी है।

8. कोई पत्थर भी पूज्यनीय तब बनता है जब पानी की अनेक चोटें खाता है। इसलिए कभी किन्हीं बातों से थको नहीं। पेपर आना माना मुझे लक्की बनाना। विघ्न आना माना भाग्यवान बनना। अगर पेपर ही नहीं दिया तो मुझे विजयी कौन मानेगा!

9. पढ़ाई ही मेरा पेपर है। सारा ब्राह्मण कुल मेरा मास्टर है। कोई भी मेरे सामने आता है तो बुद्धि में यही रहता कि यह मेरे से कितनी रूहानियत भरकर जायेगा। जितना उसको आत्मिक शक्ति मिलेगी, बल मिलेगा, उतना ही मुझे मार्क्स मिलेगी।

10. हम वर्ल्ड आलमाइटी अथॉरिटी के बच्चे हैं, बाबा ने हमें बहुत बड़ी अथॉरिटी दी है। इस ऊंचे स्वमान में रहेंगे तो अनेक छोटे मोटे विघ्न स्वतः समाप्त हो जायेंगे।

11. मुझे एक-एक को रूहानियत वा शीतलता देनी है, यह देना ही मेरी महानता है। ऐसे नहीं सोचो मैं इसे इतना स्नेह देती फिर भी यह मेरी ग्लानि करता। लेकिन कुछ भी हो मुझे काँटा नहीं लगाना है। सबको आत्मिक स्नेह देना है।



12. कभी भी अपने दिल में किसी के प्रति नफ़रत नहीं उठाओ। झगड़े का कारण है एक दो से नफ़रत। पहले होगी ईर्ष्या, जो पैदा करेगी नफ़रत, फिर परचिन्तन चलेगा, जिसका परचिन्तन करेंगे वह दुश्मन बनेगा। मुझे किसी को भी अपना दुश्मन नहीं बनाना है।

13. “ज़िद्द का स्वभाव” भी बहुत नुकसान करता है। ज़िद्द वाले बहुत धोखा खाते हैं। ज़िद्द मनुष्य को रसातल पहुँचा देता है। इसलिए कभी किसी बात की ज़िद्द नहीं करो। कोई रांग है तो भी आप राइटियस बुद्धि से निर्णय करो। एक दो को सहयोग दो, राय दो, लाइट हो जाओ। स्वयं को लाइट और माइट की मस्ती में रखो तो कभी जोश नहीं आयेगा।

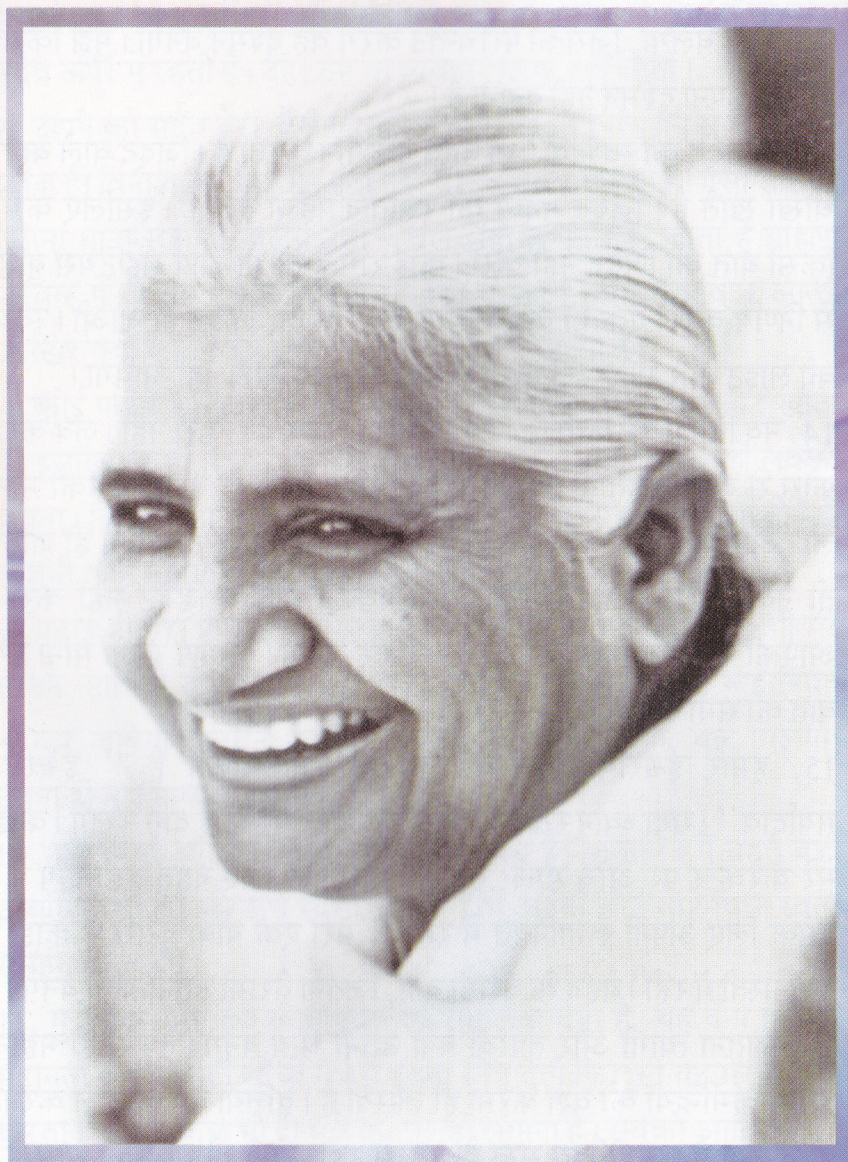
14. नव निर्माण के कार्य के लिए नम्र बनो। पुरुषार्थ से डरो नहीं। जब कोई फोर्स से कुछ कहता है तो उस समय डिबेट करने के बजाए उसकी मान लो। आप शीतल बन जाओ। अगर उस बात को लेकर दुश्मनी हो जाती तो नुकसान होता है। इसलिए कभी किसी बात में डिबेट नहीं करो। आपकी नम्रता का प्रभाव दूसरे पर ज़रूर पड़ेगा। निर्माण बनना माना हर बात को समा लेना।

15. हमारे ईश्वरीय विश्व विद्यालय का फाउन्डेशन है “ ईश्वरीय मर्यादायें”। सदा ध्यान रखो कि हमारे कैरेक्टर पर कोई दाग न लगे। कोई मेरे कैरेक्टर पर आंच डाले, यह मेरे जीवन के लिए बहुत बड़ा दाग है। इसके लिए अपनी रूहानियत में रहो। “मेरा एक बाबा दूसरा न कोई” इसी मस्ती में रहो। बेहद के वैरागी बनो, जितना वैरागी उतना योगी बनेंगे।

16. जितना त्यागी और तपस्वी बनो उतना धन्य बनेंगे। तप से ही महान बनेंगे, कर्मेन्द्रियों को वश करना ही तपस्या है। वृत्तियों को कन्ट्रोल करना ही तपस्या है। अतीन्द्रिय सुख के रस में रहो, रोटी तो घोड़े को घास है, इसका रस नहीं, रस लो एक बाबा की याद का।



स्वमान में रहकर सबको सम्मान देते चलो।



मायाजीत बनने के लिए पवन पूत (महावीर) बनो

1. स्वयं भाग्यविधाता भगवान ने हम सबके ललाट पर भाग्य की लकीरें खींची हैं, इसलिए हमें अपने भाग्य का गुणगान करना है। हम तकदीर जगाकर आये हैं, जगाने की मेहनत नहीं करते, हमारी तकदीर जगी हुई है, हम विश्व की सेवा पर उपस्थित हैं।
2. मैं तो बाबा को अपने साथ बिठाती, मैं बाबा के समान बनकर साथ में बैठ जाती। ऐसे नहीं बाबा आप तो अर्श पर हैं, मैं फर्श पर हूँ! यह इतनी दूरी भी क्यों! दूर रहेंगे तो धरनी की धूल आकर्षण करेगी। जब बाबा ने हमें पवन-पूत बनाकर उड़ना सिखाया फिर हम धूल में क्यों खेलते हैं? समान बनकर बाबा के साथ क्यों नहीं बैठ जाते?
3. हम धरती के सितारे हैं, हम जग को रोशन करने वाले हैं। ऐसे रोज़ अमृतवेले अपनी मस्ती की छाप लगाओ तो कभी नहीं कहना पड़ेगा कि बाबा हमारी तकदीर जगा दो। बाबा मदद कर दो...।
4. बाबा ने हमें चोटी से पकड़कर निकाला और अपने साथ गद्दी पर बिठाया। हम कोटों में कोई सिलेक्टेड डायमण्डज़ हैं। फिर हम डायमण्डज़ क्यों कहें कि अभी तक मेरे में दाग लगा हुआ है! अपनी वैल्यू को हम खुद ही कम क्यों करें! बाबा ने हमें सिलेक्ट कर लिया। हम बाबा के पास पहुंच गये, दुनिया देख-देख कुछ भी कहे। हम तो बाबा के बन गये, बाबा हमारा बन गया।
5. ऐसे कभी नहीं कहो कि क्या करूं माया आती है। अरे, माया आती नहीं है, आप संकल्प करके उसे बुलाते हो। आप नीचे आते हो, उसे छुट्टी देते हो तो वह पास में आती है। आप पवन पूत (महावीर) बन जाओ तो माया दूर से भाग जायेगी।
6. माया आवे तो आप उसका स्वागत नहीं करो। माया खावे नहीं उसकी

सम्भाल रखो। गेट पर चौकीदार होशियार रखो जो माया अन्दर आकर नुकसान न कर पाये। गेट के अन्दर आने नहीं देना। बाहर से आये, आकर नमस्कार करके चली जाए।

7. यह राजस्व अश्वमेध अविनाशी रूद्र ज्ञान यज्ञ है, इसमें अपनी बुराईयाँ, कमी कमजोरियाँ स्वाहा कर दो। अगर किसी के पास कोई ग्रहचारी हो, क्रोध का, काम का, जो भी ग्रह हो तो शिवबाबा के मन्त्र से, प्यार के बल से इस यज्ञ में स्वाहा कर दो। फिर माया मासी आयेगी ही नहीं।

8. जब तक मेरा प्राण है तब तक मेरा प्रण है - “एक बाबा दूसरा न कोई”। हमारा प्रण है - हम आपके सपूत बच्चे बनकर आपका नाम बाला करेंगे। हम पवित्र बनकर पवित्र दुनिया बनायेंगे। हम नई दुनिया स्वर्ग के लायक बनकर सृष्टि पर स्वर्ग ज़रूर लायेंगे।

9. प्रण माना प्रतिज्ञा। जब तक प्राण है तब तक यह प्रतिज्ञा पक्की है। शिवबाबा हमारा आपसे वायदा है मरेंगे, जियेंगे, प्राण तजेगे लेकिन प्रण कभी नहीं छोड़ेंगे। हम देवता बनेंगे, एक धर्म, एक राज्य लायेंगे। पावन बनकर पावन दुनिया बनायेंगे।

10. यज्ञ माना स्वाहा, अपने पुराने संस्कारों को स्वाहा करो। माया भले नाचे कूदे, उसके नाचने पर मुझे नहीं नाचना है। मैं तो आपका हूँ, आपका ही रहूंगा... जब इस यज्ञ में अपना सब कुछ स्वाहा करेंगे तो यह यज्ञ मनइच्छित फल देगा।

11. एक है देहधारियों में फंसने की माया, दूसरी है ईर्ष्या की प्रबल माया... इसको यह चांस मिला मेरे को क्यों नहीं! मैं-मैं करना, यह है ईर्ष्या की बोली। ईर्ष्या ऊंची स्थिति से गिरा देती है। अन्दर में ईर्ष्या होती, बाहर में बहाना करते - मेरी तबियत ठीक नहीं है, मुझे छुट्टी नहीं है। ऐसे अनेक

मज़ेदार तमाशो दिखाते हैं।

12. जो दूसरे को आगे जाता देख खुश होता है वह आगे है, यह बाबा ने हमें मन्त्र दिया है, फिर हम ईर्ष्या क्यों करते! बाबा ने हम बच्चों को आगे किया लेकिन नाम किसका है? आगे बढ़ाने वाला नैचुरल आगे है। दूसरों को चांस देने वाला स्वयं चांसलर है।



13. सेवा का उमंग है, अच्छी भावना है, यह तो अच्छा है लेकिन इसके साथ-साथ एकमत होकर चलो। ज़िद्द में आकर इसने ऐसा किया, यह ऐसा क्यों करता! यह भाषा अब समाप्त करो। हमें संगठन में चलना है तो एक दो को रिगार्ड देना सीखो।

14. जिसमें ईर्ष्या और ज़िद्द है वह है केकई, जो परचिन्तन करता वह है मंथरा। हमें तो आज्ञाकारी बनना है। आज्ञाकारी बच्चे पर बाप की दुआओं का हाथ रहता है। जो श्रीमत की पालना करता है वही स्कालरशिप लेता है।

वृत्ति की चंचलता को समाप्त करने की विधियां

1. बाबा कहते बच्चे मैं तुम बच्चों का ओबीडियन्ट सर्वेन्ट हूँ। बाबा का यह एक बोल ही हमें कितना पाठ पढ़ाता। हमारा बाबा कितना निरहंकारी है। तो हम भी अपने आपसे पूछें कि इतना निरहंकारी और निर्माणचित रहते हैं! जब ऊंचे ते ऊंचा बाप, इतनी ऊंची अर्थोरिटी कहता है मैं तुम्हारा सर्वेन्ट हूँ, तो हमें कितना निरहंकारी होना चाहिए!

2. अपने को निमित्त समझने से करन-करावनहार की याद स्वतः रहती है। जैसे हॉस्पिटल में नर्सिज़, अपनी नर्स की सेवा समझ ओबीडियन्ट हो सेवा करती हैं, वैसे हम भी सेवाधारी हैं। हम सिर्फ दूसरों को सन्देश देने वाले सन्देशी नहीं, स्व के भी सेवाधारी हैं। बाबा कहते तुम मेरे मददगार हो, सृष्टि को पावन बनाने में। तो जो दूसरे को पावन बनायेगा वह खुद भी ज़रूर पावन रहेगा।

3. ब्रह्माकुमार कुमारी माना पावन बाप के पावन बच्चे, पावन बनाने वाले। तो खुद ही खुद से पूछो - मेरी मन्सा-वाचा-कर्मणा पावन है? ऐसे नहीं कर्मणा में तो है लेकिन मन्सा में नहीं..... ऐसे नहीं लोभ छोड़ो, मोह भले रखो। अन्त का मन्त्र है - स्मृतिर्लब्धः नष्टोमोहा। जब तक ये मन्त्र प्रैक्टिकल में नहीं तब तक दूसरों की क्या सेवा करेंगे।

4. मैं अगर सबको पावन बनाने वाली बाप समान सर्वेन्ट हूँ तो मैं नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप हूँ या कहीं बुद्धि जाती है? कई कहते मेरी वृत्ति जाती है, माया के तूफान आते हैं। लेकिन यह तूफान तब आते हैं जब अपने को सर्वेन्ट नहीं समझते। अगर हम विश्व को पावन बनाने के निमित्त सर्वेन्ट हैं तो मेरी वृत्ति जा नहीं सकती।

5. बाबा कहते मैं महाकाल आया हूँ तुमको घर ले जाने। अब घर जाना है, यह धुन लग गई है। वृत्ति में है घर, धुन में है बाबा तो वृत्ति चंचल कैसे हो

सकती।

6. कोई कहते देहधारियों में मेरी वृत्ति जाती है। मेरा सवाल उठता क्यों? आप कहते हम कोशिश करते, मैं कहती तुम ओबीडियन्ट नहीं। आप कहते हम पुरुषार्थ करते, मैं कहती तुम कुछ नहीं करते। निश्चय बुद्धि ही नहीं हो। पूरा निश्चयबुद्धि कब बनेंगे? क्या मरने के बाद? क्या बाबा के यह बोल रांग हैं कि बच्चे निश्चयबुद्धि विजयन्ति। अगर नहीं तो कम्पलीट विजयी बनकर दिखाओ।

7. अगर मेरी बुद्धि किसी में अटैच होगी तो क्या मैं दूसरे को पावन बना सकूंगी! खुद फंसा हुआ दूसरे को फांसी से कैसे छुड़ायेगा! अगर कोई कहते मेरे से यह विकार जाते नहीं, वृत्ति पवित्र बनती नहीं तो मैं कहती यह तो तुम जैसे फांसी के तख्ते पर लटके हुए हो। अगर अभी फांसी के तख्ते से उतर बापदादा के दिलतख्त पर नहीं बैठे तो फिर कब बैठेंगे!

8. मैं कहती हूँ - माया तू मेरे पास क्यों नहीं आती! मैं तो माया को चैलेन्ज करती हूँ, मैं अपने बाबा की हूँ, मैं दुनिया की थोड़ेही हूँ। आप दुनिया को देखते हो तो वह ऐसे-ऐसे करती है। हमारे पास दुनिया को देखने के लिए आंखें ही नहीं हैं। बाबा ने हमारा तीसरा नेत्र खोल दिया। देहधारियों को देखने वाला नेत्र ही नहीं है।

9. ओबीडियन्ट माना आज्ञा का पालन करने वाला फेथफुल। मैं अगर ओबीडियन्ट हूँ तो बाबा के डायरेक्शन के खिलाफ गलतियां क्यों होती? जब हम सर्वेन्ट हैं तो सेठ की बात क्यों नहीं मानते! जब सेठ से बुद्धि हट जाती है तो भाव-स्वभाव में आकर झगड़ा करते। बाबा कहता बच्चे निर्माण बनो, नम्र बनो और हम होते गर्म। तो क्या मैं ओबीडियन्ट हुई! हमें तो बहुत-बहुत मीठा बनना है।

10. कई अनुमान की दुनिया बनाकर बैठते हैं। भूख होती है मान की, फिर

बातें दूसरों की निकालते रहते। फलाना ऐसा है, फलाना ऐसे बोलता, कई बार मिसअन्डरस्टैंडिंग में अनुमान का शिकार हो जाते। अनुमान की बीमारी कईयों को शिकार कर मार देती है। कई कहते हैं मैं तो इज़्जत से चलने वाला हूँ... मुझे यह ऐसा कहते! मेरे लिए ऐसा सोचते... फिर माया के शिकार हो जाते, पढ़ाई ही छोड़ देते।

11. हम कितने लक्की हैं, एक के हैं, एक हैं... अपने लक्की की महिमा करो। मुझे बाबा ने बचा लिया.... फिर क्यों कहते वृत्ति चंचल होती? आज यह संस्कार नक्की लेक में डुबोकर, समाप्त करके जाओ। इन्हें दूध पिलाकर मोटा नहीं करो।

12. बुद्धि में दृढ़ता हो कि हम किसके हैं तो माया आ नहीं सकती। हमारा जन्म बदला, हमारा नाम, धर्म, कुल, कर्म, सम्बन्ध, सब कुछ बदल गया। हम सारी दुनिया से बदल गये फिर इस दुनिया को देखें भी क्यों!

13. इच्छा मात्रम् अविद्या... कोई इच्छा उठती ही नहीं, फिर मैं किसकी इच्छा करूँ! दुनिया में कौन सी चीज़ मेरे बाबा से बड़ी है जिसकी मैं इच्छा करूँ? एक को पाया सब कुछ पाया। पा लिया.. तो क्या इच्छा...!

14. आपको फैशन का शौक क्यों होता? जब हम दुनिया के नहीं तो यह फैशन क्यों? जिसका बाबा से प्यार होगा वह दुनिया का फैशन नहीं करेगा। दुनिया की चाल नहीं चलेगा। जो बाबा का प्यारा है वो दुनिया से वैरागी है। वैरागी नहीं तो बाबा का, परिवार का प्यारा नहीं।

15. अमृतवेले अन्डरग्राउण्ड जाकर बाबा के पास बैठ जाओ। तो सारा दिन बाबा के अण्डर रहेंगे। अमृतवेले अण्डर नहीं होते तो सारा दिन माया यूं-यूं करती। अन्डरग्राउण्ड जाना माना एक मैं आत्मा लाइट बिन्दू, दूसरा मेरा बाबा बिन्दू... एकदम ऐसा अनुभव होता, जैसे सच्ची मस्ती में हूँ।

16. रोज़ अमृतवेले बाबा से दुआओं की झोली भर लो। मेरे बाबा की

दुआयें मेरे साथ हैं। जब वह मेरे साथ हो जाती तो मैं वरदानी बन जाती। वरदानी बच्चे ही पुण्यात्मा हैं। मैं पुण्यात्मा हूँ फिर पापात्मा क्यों बनूं! ऐसे अपने से रोज़ बातें करो। अमृतवेले बाबा की गोदी में छिप जाओ, उसमें समा जाओ, लीन हो जाओ। फिर सारा दिन बहुत मीठा हो जायेगा। दिल बड़ी मज़बूत हो जायेगी।

17. कभी किसी बात में मूँझो नहीं, घुटका नहीं खाओ। सदा खुशी में नाचो तो माया चली जायेगी। अपने को बिज़ी रखो। खाली रहेंगे तो कहा जाता खाली मन शैतान का डेरा। बिज़ी का मतलब यह नहीं कोर्स कराया, प्रदर्शनी की.... नहीं, अपने को बिज़ी रखने के कई साधन हैं। लिखो-पढ़ो अपनी मस्ती में रहो, यह मस्ती ही अपनी प्रापर्टी है।



निर्भय बनो तो विकारों की शक्ति डरा नहीं सकती,

माया भय का भूत है

1. जैसे कभी कोई छोटी सी चीज़ का भय बैठ जाता है। रस्सी को भी सांप समझकर भयभीत हो जाते हैं, वैसे ही माया है... यह भी भय के भूत का बड़ा सांप दिमाग में बिठा लिया है। अब सांप तो है ही सांप। वह तो है ही विषैला। वह तो ज़हर ही फूकेगा। सांप से खेलो नहीं, उससे डरते क्यों हो! वह कोई खिलौना नहीं है। सांप है तो किनारा कर लो।

2. पांच विकार भूत हैं लेकिन वह हैं ही भूत, है ही गन्दी चीज़। गन्दी चीज़ को देखेंगे, दृष्टि डालेंगे या उससे किनारा करके चले जायेंगे? उनके पास जायेंगे तो ज़रूर बदबू आयेगी। किनारे हो जाओ तो बदबू से बच जायेंगे। यह है ही छी-छी दुनिया। मैं अगर शौक से पिक्चर देखूंगी तो वह मुझे ज़रूर आकर्षित करेगी। मैंने अटेन्शन दिया तो उसने खींचा। अगर हम कहें यह तो डर्टी है, तो वह खींच नहीं सकती। ज़रा भी इन्ट्रेस्ट लिया तो खींच ज़रूर होगी।

3. अगर मैं परचिन्तन करूंगी तो दूसरा सुनेगा। बाबा ने कहा बच्चे इस असार संसार का समाचार न सुनो, न देखो और न वर्णन करो। बाबा की गोदी छोड़कर उतरते क्यों हो! गोदी में सदैव बैठे रहो, उनकी छत्रछाया के नीचे रहो तो कोई की ताकत नहीं जो मेरे पास आये। निर्भय बनो तो माया आ नहीं सकती।

4. निर्भय माना कोई भी विकार की शक्ति नहीं जो मुझे डरा सके। माया हरा नहीं सकती। मैं तो महावीर-महावीरनी हूँ। दुनिया की कोई भी शक्ति नहीं जो मुझे भयभीत करे या मुझे अपनी उंगुली दिखाये। आप चैलेन्ज करो कि कोई ऐसी ताकत नहीं जो मुझे हरा सके। यह कहने की बात नहीं

लेकिन अन्दर में दृढ़ता हो, इतना मास्टर सर्वशक्तिमान् बनकर रहो।



5. अन्दर में थोड़ा भी आलस्य आया तो पूरा ही खा जायेगा। आज थोड़ा आलस्य आयेगा, कहेंगे चलो क्लास में लेट जाते, क्या फ़र्क पड़ेगा। धीरे-धीरे माया पूरा ही खा लेगी। सर्विस की फ़ील्ड में भी आलस्य के वश अनेक बहाने बनाते। दिल सच्ची नहीं तो अनेक कारण निकलते। दिल सच्ची हो तो कोई भी कारण नहीं।

6. अपने संकल्पों को स्टॉप करने की प्रैक्टिस करो। अभी-अभी साकारी, अभी-अभी निराकारी स्थिति में स्थित होने का अभ्यास करो, इसके लिए नियम बनाओ। ड्रिल करो, अटेन्शन रखकर प्रैक्टिस करो तो बुद्धि शीतल और शक्तिशाली बन जायेगी। खुशी में रहेंगे।

7. रोज़ अपने से पूछो - मैं परिवर्तन हुआ हूँ! मेरे में परिवर्तन करने की शक्ति है! हम पहले तो पुरानी दुनिया से नई दुनिया में ट्रांसफर हुए। देह-अभिमान के संस्कार परिवर्तन हुए। देह-अभिमान के साथ सब दुर्गुण, अवगुण भी परिवर्तन हो गये।

8. सृष्टि के साथ-साथ जीवन चक्र भी परिवर्तनशील है। अभी मेरी बैटरी फुल होती जा रही है, ऐसा तो नहीं आज फुल नशा चढ़ा हुआ है कल छोटी मोटी बात हुई तो डाउन हो जाएं। उनका नशा जैसे कि बालू के ढेर पर है, ज़रूर वह खिसकेगा। इसलिए उसे सीमेन्ट की दीवार दे दो तो उतरे नहीं।

9. आपस में दो चार दोस्त मिले तो खुश, अगर नहीं मिले तो खुशी गुम। जायेंगे सेवा करने, भावना होगी दूसरे के कल्याण की। अन्दर में चलेगी पार्टीबाज़ी। बाहरी रूप बहुत अच्छा होता, अन्दर में चलेगी मीठी-मीठी छुरी - कभी आंख से तो कभी मुख से। ऐसी सेवा से कोई फ़ायदा नहीं।

10. सबसे अच्छा गुण है - सदा बाबा की एक लगन में रहकर इन्डिपिन्डेंट होकर रहना, परन्तु इसका यह भाव नहीं कि मैं तो अपना सब कुछ करूंगा, नहीं। आत्माओं पर डिपेन्ड नहीं करो लेकिन बाबा पर डिपेन्ड करो। रहना



तुम्हें संगठन में है, ऐसे भी नहीं मेरा तो किसी से कनेक्शन नहीं। निर्माण बनो। निर्माणता के लिए हमें यह दो हाथ मिले हैं। निर्माण बनकर संगठन में चलना सीखो।



**राजऋषि बेहद के वैरागी बनो तो
बेदाग डायमण्ड बन जायेंगे।**

सबका प्रिय बनने के लिए सहनशील बनो

1. सहनशीलता का गुण सर्व गुणों में महान गुण है, सहनशक्ति सबसे श्रेष्ठ शक्ति है। दुःख-सुख, स्तुति-निंदा, मान-अपमान सबमें समान, एकरस स्थिति में रहने के लिए, सहनशीलता का गुण चाहिए। इस ज्ञान का पहला-पहला गुण ही यह है। अगर ज्ञानी तू आत्मा में यह गुण नहीं तो वह सबका प्रिय नहीं।

2. जैसे बाल से युवा, युवा से वृद्ध होते तो कभी यह नहीं कहते कि ओ नेचर तूने बाल से युवा वा युवा से बूढ़ा क्यों बनाया? परन्तु जानते हैं यह प्रकृति का नियम है। चार ऋतुयें होना यह भी प्रकृति का नियम है। तो हम क्यों कहें ओ प्रकृति तुम हमें ठण्डी में वा गर्मी में दुःख क्यों देती! हम जानते हैं यह नेचर का गुण है। सर्दी के समय सर्दी, गर्मी के समय गर्मी होनी ही है। हमारे पास उससे बचने के साधन हैं तो उसे यूज करें।

3. अभी की प्रकृति है ही तमोप्रधान, सतयुग में प्रकृति सतोप्रधान है इसलिए सुखदाई है। अभी तमोप्रधान है इसलिए प्रकृति पर कभी गुस्सा नहीं आता। कभी भी हम ऐसे नहीं लड़ते - ए सर्दी तू मुझे दुःख क्यों देती? किससे लड़ेंगे? जब बुद्धि में आता यह तो प्रकृति का धर्म है तो उससे लड़ने नहीं जाते। फिर जब कहते क्या करें यह पारिवारिक परिस्थितियां आती हैं, वह तो आयेंगी ही। मैं उसमें भी दुःखी क्यों हूँ! जैसे प्रकृति का दुःख सुख सहन करते, वैसे यह परिवार का भी तो हिसाब-किताब है। मैं उसमें क्यों लड़ूँ! हमें उसमें अपनी स्थिति अप-डाउन नहीं करनी है।

4. जब कोई मुझे मान नहीं देता तो गुस्सा आता लेकिन जब प्रकृति दुःख देती तो गुस्सा क्यों नहीं आता। जब मेरा कोई अपमान करता तो मैं नाराज़ होती लेकिन मैं सोचूँ कि मैंने उसे कितना मान दिया है! एक है देना, एक है लेना। जब अपमान पर गुस्सा आता माना मैं मान की भूखी, प्यासी हूँ। मान

की मांग है। मैं दाता हूँ या लेवता? मुझे मान देना है या लेना है? मैं वरदाता हूँ या आत्माओं से वर लेने वाली हूँ? मान मांगना अर्थात् आत्माओं से वर मांगना।

5. कहा जाता तू प्यार करो तो सब करें। कहते हैं मैं तो सबको प्यार देता लेकिन आगे वाला मुझे ठुकराता। इसमें हमेशा समझो यह मेरा हिसाब-किताब है। 63 जन्मों का हिसाब-किताब चुक्ती करना है। जहाँ प्यार होगा वहाँ सब मान देंगे। शुभ भावना रहेगी, शुभ चिन्तन चलेगा फिर उनके लिए मेरा वरदान रहेगा। अगर मैं इस स्थिति पर रहूँगी तो सब मेरी स्तुति करेंगे। अगर मैं ही अपनी स्थिति पर नहीं रहती तो कोई भी मेरी स्तुति नहीं करेगा।

6. पहले तो मेरी स्तुति मेरे 10 मंत्री (कर्मेन्द्रियां) करें, जो मुझ आत्मा का संस्कार है वह संस्कार मेरी स्तुति करे, जब मेरा संस्कार मेरी स्तुति करे अर्थात् आर्डर में रहे तब दूसरे भी स्तुति करेंगे। बाबा ने कहा 3 मंत्री हैं मुख्य – मन बुद्धि और संस्कार। तो मेरा पहला मंत्री (मन) मेरे आर्डर में है? आर्डर में है तो शुद्ध संकल्प स्वतः रहेंगे। फिर यह क्यों आता मेरा यहाँ अपमान हुआ? यह संकल्प आना भी तो अशुद्धता है।

7. दस शीश वाले रावण को स्वाहा करने के लिए हमारे बाबा ने यह रुद्र यज्ञ रचा है। तो हरेक पूछे मैंने अपने दस राक्षसों को इस यज्ञ में स्वाहा किया है? इन्द्रियजीत बनने का मतलब है, अपनी कर्मेन्द्रियों को दिव्य बनाना।

8. चेक करो कि मेरे कान दिव्य बने हैं? या अभी तक कनरस सुनने का शौक है? परचिन्तन पतन की ओर ले जायेगा। फिर ऐसा परचिन्तन वाला मान पा सकता है? हमारे यह नयन दूसरे को प्यार की भावना से, भाई-भाई की दृष्टि से, बाबा के रत्न देखने के लिए हैं, अगर यह नयन बुरी दृष्टि से देखते, द्वेष की दृष्टि से देखते तो क्या यह नयन मुझे मान देंगे? अगर नयनों ने बुरी नज़र से देखा, द्वेष दृष्टि डाली तो मेरे नयन ही मुझे अपमानित

करते। दुःख देते फिर दूसरे से मान कैसे मिलेगा!

9. जो अपने संकल्पों को शुद्ध रखता है उसको सबका प्यार मिलता है। मेरी बुद्धि अगर परचिन्तन में घूमती, सत्यता को छोड़, स्वच्छता को छोड़, असत्यता की ओर जाती तो पहले मेरी बुद्धि ने ही मुझे प्यार नहीं दिया। अगर बुद्धि ही प्यार नहीं करती तो दूसरे क्या करेंगे! साथ-साथ यह भी देखो कि मेरे संस्कार मुझे रिस्पेक्ट देते हैं? मैंने अपने संस्कारों की चंचलता को स्वाहा किया है? अगर मेरे संस्कार ही मुझे रिस्पेक्ट नहीं देते तो दूसरे क्या देंगे!

10. जिसमें ज़रा भी मूड आफ की आदत है, उसे मान मिल नहीं सकता। मूड आफ माना आफ। उसे कौन सी प्रेम की आफ़र मिलेगी! उसे कौन आफ़रीन देगा? अगर कहते आफ होने की आदत है, तो आदत शब्द ही बुरा है।

11. मेरा गुण है दिव्य रहना। जहाँ दिव्यता है वहाँ मान अपमान का सवाल समाप्त हो जाता। जहाँ मांगते हो कि मान मिले, वहाँ वह दूर हो जाता है। कई कहते हैं क्या करूं - गुस्से में हाथ चल गया। अरे चल गया या तूने चलाया? कहते हैं न चाहते भी गाली निकल गई। अरे मुख किसका गंदा हुआ! जिसने गाली दी उसका मुख बासी हुआ। तू बासी मुख वाले को मुंह क्यों देते! तुम उनसे मुख मोड़ लो। तुम उनके साथ गंदा क्यों बनते हो!

12. कई दीवारों पर बने हुए गन्दे चित्रों को देख कहते मेरी आंखें खराब हो गईं। अरे वह तो जड़ है, मैं चैतन्य, मैं अगर कहूँ मुझे यह पिक्चर का चित्र अपनी तरफ खींचता तो मेरा वह राजा हुआ, मैं प्रजा हो गई। एक दीवार का चित्र मेरा चित काट लेता। वह चित्र मेरा दिलाराम बन गया, जिसने दिलाराम बाप से दिल तुड़ा दी।

13. बाबा ने कहा है तुम शरीर निर्वाह लिए कर्म करो, बाकी गन्दे चित्र देखना, नाविल्स पढ़ना... इसकी छुट्टी बाबा ने नहीं दी है। कोई कहते हैं क्या करें दिल उदास होती तो पढ़ लेता हूँ, पढ़ोगे, देखोगे तो ज़रूर वह बुद्धि को डिस्टर्ब करेगा। इसलिए यह परहेज़ ज़रूरी है।



स्थिति को श्रेष्ठ और ऊंचा बनाने की युक्तियाँ

1. मेरे दिल में सबके लिए रिस्पेक्ट हो। रिस्पेक्ट तब रख सकते जब अन्दर में शुभ भावना हो। अगर अनुमान और नफ़रत होगी तो प्यार भी गंवायेंगे, मान भी गंवायेंगे, यूनिटी भी टूटेगी। भल तुम्हें गिराने लिए कोई ने गद्दु खोदा हो, लेकिन अगर तुम सच्चे हो, तुम्हारे दिल में उसके प्रति शुभ भावना है तो बाबा तुम्हारी रक्षा करेगा। तुम्हें बचा लेगा।
2. कभी क्या, क्यों, कैसे इन प्रश्नों में अपना माथा गर्म नहीं करो। दिमाग को शीतल कुण्ड बनाओ। हाँ जी का पाठ गर्मी निकाल देता है। शीतल काया वाले योगी बन जाओ। अन्दर में कभी किसी के प्रति अशुभ भाव न हो। किसी को श्राप देने वाले दुर्वासा नहीं बनो। राजयोगी दुर्वासा नहीं बन सकते। मुख से अशुभ, श्रापित करने वाले बोल नहीं बोल सकते।
3. बाबा की श्रीमत है बच्चे क्षीरखण्ड होकर रहो। स्वप्न में भी लूनपानी (खारा पानी) नहीं होना। मेरा काम है दूध-चीनी होकर रहना। अगर मेरे में नमक होगा तो दूसरे भी मेरे ऊपर नमक डालेंगे। लूनपानी होने का मुख्य कारण है देह-अभिमान। अगर मैं इस दुश्मन से किनारा कर क्षीरखण्ड रहूँ तो कोई भी बात मेरे सामने आयेगी भी तो हवा की तरह चली जायेगी। सदा क्षीरखण्ड रहो माना एकता में, युनिटी में रहो।
4. मेरा व्यवहार श्रीमत के अनुकूल हो। मुझे श्रीमत है, तुम देहधारी के आकर्षण में नहीं जाओ। अगर आकर्षण होता है तो वह श्रीमत की लकीर छोड़ता है। उन्हें रावण अपनी शोकवाटिका में ले जायेगा।
5. ईर्ष्या के वश कभी भी किसी को गिराने का ख्याल नहीं करो। अगर स्वयं को चढ़ाने का संकल्प और दूसरे को गिराने का संकल्प है तो यह बहुत बड़ा पाप है। जिनके हृदय में प्रेम है, उनके हृदय में बाबा की याद है। जिनके हृदय में बाबा है, उनके हृदय में बाबा के सब रत्न हैं। बाबा के सब

फूल हैं। चुम्बक हमारा बाबा है, चलाने वाला बाबा है। बाबा के सब प्यारे बच्चे हैं। बेहद की भावना रखो। हदों में नहीं आओ।

6. हम राजयोगी नव निर्माण के लिए इस बेहद झाड़ की जड़ में बैठे हैं, हमें इसमें याद और पवित्रता की शक्ति का जल डालना है। जैसे कोई मकान बनाते हैं तो उसका आधार नींव पर रहता है। जितना फाउन्डेशन पक्का होता उतनी मंज़िल की इमारत का प्लैन बनाते हैं। हमें भी बाबा ने नई दुनिया के नव निर्माण के फाउण्डेशन में रखा है। हमारा बाबा है फाउन्डर, उसने हमें फाउन्डेशन में रखा है और कहा है इसमें योग का, पवित्रता का जल डालो और ज्ञान की शक्ति से इस इमारत को मज़बूत करो।

7. जिसको श्रीमत का लॉक लगा है वही लकी है, हम बाबा की लॉक के अन्दर हैं माना श्रीमत के अन्दर हैं। बाबा ने हमें मंत्र दिया है - जो देखते हो वह न देखो, जो नहीं दिखाई देता है उसे याद करो। भिन्न-भिन्न संस्कार तो कर्मों का हिसाब-किताब हैं। मुझे कर्मों का खाता चुक्त् करना है ना कि बनाना है।



एकमत होकर रहो और एकरस स्थिति बनाओ

1. हम राजयोगियों के सभी सम्बन्ध एक से हैं। एक से ही हमारा नाता है, एक से ही हमारा रिश्ता है। एक के हम हैं। एक ने ही हमें अपना बनाया, वन्डर यह है कि वह एक हरेक का एक है। हरेक के सारे सम्बन्ध उनसे हैं। देहधारी से कोई सभी अपना सम्बन्ध नहीं जोड़ सकते। यह एक ही सब बच्चों का सर्व सम्बन्धी है। इसलिए हम सभी वन हैं, वननेस है, टू श्री नहीं।

2. वन्डर यह है जो वह कभी नहीं कहता कि तुम मेरे बड़े बच्चे हो, तुम्हें ज़्यादा अधिकार दूँगा, तुम छोटे बच्चे हो तुम्हें कम दूँगा। नहीं। सबको एक ही पढ़ाई पढ़ाता, एक ही अधिकार देता। सभी को राजयोगी जीवन के एक जैसे नियम बताये, एक जैसी मर्यादाएं बताई, संयम नियम दिये। इसलिए हम सब एक ढांचे के पले हुए बच्चे हैं।

3. बाबा ने हम सबको एक ही मंत्र दिया है - एकमत, एकरस और एकानामी। तो हर एक अपने आपसे पूछे कि हमारी एकमत है? सबके दिलों में एक श्रीमत याद रहती है? जहाँ एकमत है वहाँ द्वेत नहीं, द्वेष नहीं, राग नहीं, जब एक मत है तो न हमारी अनेकता है, ना कोई भेद है। न कोई ईर्ष्या है, न कोई से नफरत है, न कोई से मन में ग्लानि है, न वैर विरोध है, मेरे मन में कोई भी दो मतें नहीं। जहाँ एकता है, वहाँ ईश्वर है।

4. हमारा परम मित्र एक बाबा है, इसलिए खुदा को ही सच्चा दोस्त बनाओ। उससे हमारी दोस्ती है, हम खुदाई खिदमतगार हैं। देहधारी तो कभी मित्र बनेंगे कभी दुश्मन इसलिए अपना अविनाशी मित्र एक बाबा को बनाओ।

5. एकरस स्थिति बनानी है तो एक की याद में समाये रहो। वो एक ही हमारा प्यारा है। सब रस एकरस में समाये हैं। सर्व सम्बन्धों का रस उनसे लो, सर्व शक्तियों का रस भरने वाला एक बाबा है इसलिए सदा एक बाबा

दूसरा न कोई। उसे ही याद करो, उसमें समाये रहो तो कोई मोह ममता नहीं रहेगी। कर्मेन्द्रियां भी शान्त हो जायेंगी।

6. कोई को कनरस चाहिए, कोई को मुख का रस, किसी को जीभ का रस चाहिए, किसी की बुद्धि दूसरों की सूरत में जाती, उसके नयन दूसरों की सूरत देखते, सीरत नहीं। हमारे को बाबा ने कहा है इन कानों से मधुर बोल सुनो, दूसरी बातें नहीं सुनो, दूसरे रसों में नहीं जाओ।

7. अगर स्थिति को एकरस बनाना है तो अल्पज्ञता की छोटी-छोटी बातों को भूल सदाकाल के नशे में रहो। ये मान है, ये अपमान है, ये इज्जत है, ये बेइज्जत है ... ये सब बातें छोड़ अपने ऊंचे स्वमान में रहो। अगर हम अपनी सीट पर बैठेंगे तो सारी दुनिया मेरी इज्जत करेगी। सीट पर बैठने वालों की डबल पूजा होती है।

8. तुम एक के प्यारे रहो, तो दुनिया प्यार करेगी। मेरी इज्जत एक ने की तो दुनिया मेरी इज्जत करेगी। तुम एक के प्यार में डूब जाओ। एक से सम्बन्ध रखो तो दुनिया की कोई हस्ती के प्यार की भूख नहीं रहेगी। प्यार मांगा नहीं जाता, प्यार किया जाता है। तू सबको प्यार करो तो सब प्यार करेंगे। तुम शुद्ध भावना रखो तो सब रखेंगे।

9. यह ज्ञान वृत्तियों का है, हमारी शुभ वृत्ति अर्थात् शुभ भावना और शुभ कामना ही सारे विश्व को बदलती है। एक से शुभ भावना लो और सबको दो। अगर किसी से सूक्ष्म में भी नफ़रत है तो यह भी पाप है। सूक्ष्म में भी यदि किसी से ईर्ष्या करते तो यह भी पाप है। अगर ईर्ष्या करनी है तो एक बाबा से करो, जो हमें दौड़ाकर इतना बड़ा जम्प दिलाता है।

10. मेरी बुद्धि में सदा यही रहता कि हम पंछी हैं परदेशी, हमारी डालें हैं तो सभी, नहीं तो कोई नहीं। यह पुरानी दुनिया हमारी नहीं, यह तो खत्म हुई कि हुई। हम तो उड़कर जाने वाले हैं। मैं तो उड़ने वाला पंछी हूँ, मुझे इस

डाल का, इस पुरानी खाल का नाज़ नहीं।

11. अपनी स्थिति सदैव सागर के समान रखो जिसमें अनेक लहरें हैं। कोई कहेंगे सागर की लहरों से मेरी नींद खराब होती, कोई कहेंगे कैसी सुन्दर मन को लुभाने वाली लहरें हैं। कोई कहेंगे यह सागर खारा है, कोई कहेंगे यही सागर तो नदियों को मीठा पानी देता। इसी से तो हमें अनेक रत्नों की थालियां मिलतीं। हमें तो उस आनन्द के सागर में, प्यार के सागर के प्यार में रहना है। हम दूसरी लहरों में क्यों आयें!

12. दुनिया की लहरें अपना काम करें, हम अपना काम करें, हम उन लहरों में न लहरायें। हम उन लहरों से ऊपर रहें। कहते क्या करें, दुनिया की परिस्थिति ऐसी है! अरे वो तो है ही ना। दुनिया तो अनेक चपेटों में लाने वाली है। दुनिया है ही झमेलों की, हमें उसमें नहीं आना है। हम तो बाबा की लहरों में रहते। एक की लहरों में लहराओ तो सब बहाने खत्म हो जायेंगे।

13. अपनी स्थिति, परिस्थिति को नहीं बेचो, परिस्थिति के ऊपर रहो। वह है ही पराई स्थिति, रावण की स्थिति। स्वस्थिति है ही हमारे बाबा की दी हुई, उसमें रहो।

14. अपने को सदा बाबा से भेंट करो, दूसरे किसी से न मांगो, न भेंट करो। संग की बहुत सम्भाल रखो। संग का रंग ही लगता है, इसलिए न किसी को पर्सनल दोस्त बनाओ, न किसी के दोस्त बनो। सबसे दोस्ती रखो, खुदा को दोस्त बनाओ।

15. कोई का मूड बार-बार आफ हो जाता माना वह बाबा से आफ हो गया, लाइट का स्विच आफ हो गया। आफ माना स्थिति मुर्दे समान हो गई। इसलिए अपने को कभी भी आफ नहीं करो। हमें बाबा ने आन कर दिया। एक बार स्थिति बिगड़ी माना 100 बार का नुकसान।

16. ज्ञानी का पहला लक्षण है - एक ने कहा दूसरे ने माना, इसी से एक मत रहेंगे। सदैव हां जी का पाठ पढ़ो तो कभी क्यों, क्या नहीं उठेगा। जो क्यों, क्या करते उनकी क्यू खत्म नहीं होती, वह क्यू में ही खड़े रहते। कहा जाता खुशी जैसी कोई वस्तु नहीं, खुशी खुद को खुद से प्राप्त होती। खरीदी नहीं जाती।



बाह्यमुखता के वातावरण को समाप्त कर अन्तर्मुखी बनो, अशरीरी बनो

1. अब बाबा हम बच्चों को यही इशारा करता कि बच्चे, अशरीरी भव। इसी अभ्यास से आत्म-अभिमानि बनेंगे। ऐसे साइलेन्स में रहो जो कोई भी सामने आये तो वह भी आपकी साइलेन्स की शक्ति से इस देह के भान को भूल जाये। इसके लिए आत्मा भाई-भाई हूँ, यह अभ्यास पक्का करना है। अब ऐसी शान्ति की, गहरे योग की अनुभूति सबको करनी है।
2. अब बाहरमुखता के वातावरण को बन्द करके अन्तरमुखी बनने का, डेड साइलेन्स में रहने का विशेष अटेन्शन रखो। इससे जो भी स्वयं की स्वस्थिति में, संगठन में अथवा यज्ञ में छोटे-मोटे विघ्न आते, वातावरण होता, वह समाप्त हो जायेगा। इसके लिए अब एक-दूसरे को योग के वायब्रेशन्स दो, स्नेह के वायब्रेशन्स दो। प्यारे बाबा के प्यार में खो जाने का वातावरण बनाओ।
3. और कोई चिंता भले नहीं हो पर अपनी उन्नति की चिंता सबको ज़रूर करनी है। यदि कोई एक भी उल्टे कर्म करता है या किसी की वृत्तियों में भी गलत वायब्रेशन्स हैं तो सारे वातावरण को खराब कर देता है। हर एक्शन का रिएक्शन ज़रूर होता है। अच्छा करते तो भी 100 गुणा रिटर्न है, अगर कोई गलत करते तो भी 100 गुणा दण्ड है।
4. यह जो समय चल रहा है, यह हमें अन्तिम घड़ियों की वारनिंग देता। सूक्ष्म में बार-बार यह वायब्रेशन्स ज़रूर आते कि अभी यह अन्तिम पुराने शरीर भी कब तक? यह पुरानी दुनिया भी कब तक?
5. बाबा रोज़ इशारा तो करते लेकिन कई सोचते हैं कि बाबा तो सालों से कहते रहते हैं, विनाश तो होता नहीं। जब होगा तब देख लेंगे, ड्रामा में जो पुरुषार्थ करना होगा, वही होगा। पुरुषार्थ के लिए तो अभी बहुत टाइम है।

हमें कोई हठयोग थोड़ेही करना है, हमारा तो सहजयोग है, घूमो-फिरो, खाओ-पिओ, टी.वी. देखो, हँसो-बहलो, नाचो क्या हम बी.के. इसीलिए बने हैं? बिल्कुल नहीं। जो ऐसा कोई सोचकर चल रहे हैं वो बहुत बड़ा बोझ अपने ऊपर ले रहे हैं।

6. जो परचितनों में, तेरी-मेरी बातों में टाइम वेस्ट करते, उन पर बहुत बोझ चढ़ता है। उस बोझ का हिसाब धर्मराजपुरी में देना पड़ेगा। हम बाबा के बच्चों के लिए अनेक बन्धन हैं, हम निर्बन्धन नहीं हैं। हम तो कहते हैं बाबा हम मुये मर गई दुनिया। हम बाबा तेरे पर बलिहार हो गये। हमारे लिए दुनिया मरी पड़ी है। न हम दुनिया के हैं, न दुनिया हमारी है। हम दुनिया को पैगाम देने वाले पैगम्बर हैं। और कोई से किसी भी प्रकार का बंधन नहीं है।

7. बाबा ने हम बच्चों को सेवा की ड्यूटी दी है लेकिन स्व-उन्नति के लिए कहा है हे बच्चे, तुम बेहद के वैरागी, बेहद के त्यागी और बेहद के तपस्वी हो। तुम राजऋषि, राजयोगी हो। एक बाबा के सिवाए तुम्हारा कोई नहीं। तुम बाबा के प्राण हो, बाबा तुम्हारे प्राण हैं और कोई नहीं।

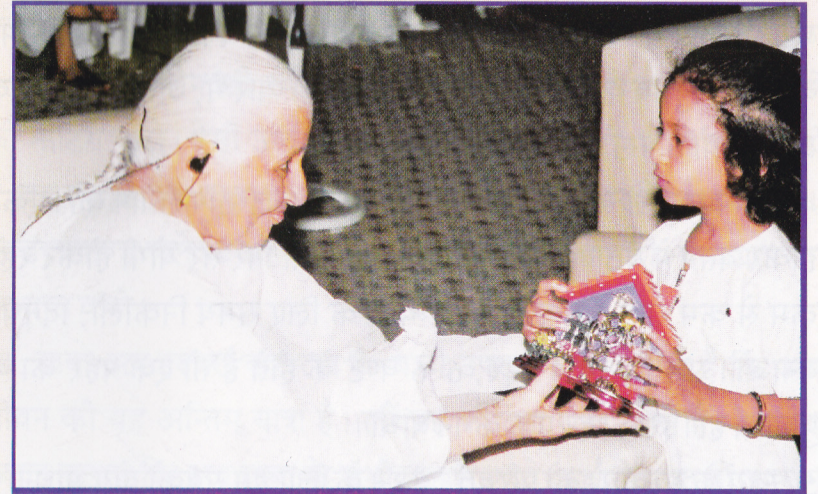
8. कभी कोई कहते हमें तो मनोरंजन जरूर चाहिए, तो यह शब्द सुनकर मुझे बहुत आश्चर्य लगता, अरे हम योगियों को कौनसा मनोरंजन चाहिए? मैं समझती हूँ हमारा मनोरंजन बाबा है। बाबा के सिवाए हमारा कोई इस जीवन में मनोरंजन नहीं है। बाबा के कमरे में जाओ, रूहरिहान करो। ज्ञान की आपस में मीठी-मीठी रूहरिहान करो। मुरली दोहराओ, प्रश्न करो, विचार सागर मंथन करो – यही हमारा मनोरंजन है।

9. कम से कम 101 दिन के लिए हर एक यह कंगन बांधो कि “किसी भी कार्य में हम धीरे से धीरे, कम से कम बोलेंगे।” हमारा स्लोगन है कम बोलो, धीरे बोलो, मीठा बोलो, सोच समझकर बोलो और सत्य बोलो।

10. बाबा हमें कहता तुम व्यास भगवान के बच्चे सच्चे-सच्चे सुखदेव, सुख के देवता हो। तो हमें संकल्प से, बोल से सबको सदा सुख देने का ही व्यवहार करना है। और साइलेन्स के बन्धन में बंधकर सच्चे-सच्चे लाइट हाउस, माइट हाउस बनना है, डायमण्ड बनना है। साथ-साथ हर्षितमुख भी रहना है।

11. अब सभी योग की गुफ़ा में चले जाओ, अन्डरग्राउण्ड हो जाओ। सभी कार्य सम्भालते कम से कम हर एक का योग 4 घण्टा तो जरूर होना चाहिए। अब हर एक अपनी आत्मिक स्थिति को बढ़ाओ, ऐसे समझो अब हमारा पुरानी दुनिया से लंगर उठता है, अब हमें घर जाना है।

12. हरेक छोटा बड़ा सोचे कि आज अगर मेरा शरीर छूटे तो मुझ आत्मा की स्थिति क्या होगी? इसलिए अब हम सबको विशेष मौन भट्टी में रहना है, याद की यात्रा में खोये हुए रहो। ऐसी भट्टी हरेक स्वयं करे जिससे स्वयं भी संतुष्ट रहे, शीतल रहे और उसे देख दूसरों को भी प्रेरणा मिले।



उपराम और बेहद के वैरागी बनो

1. समय प्रमाण बापदादा का मूल इशारा है कि एक सेकण्ड में संकल्पों को एकाग्र करो, ऐसी अपनी श्रेष्ठ ऊंची स्थिति बनाओ, यह बहुत बड़ी मंज़िल है। प्रैक्टिकल में एक सेकण्ड में संकल्पों को एकाग्र करने का अभ्यास हो तो कभी ऊंची स्थिति से नीचे की स्थिति में, वातावरण के प्रभाव में नहीं आ सकते।
2. अभी हम सब एकाग्रता का ऐसा अभ्यास करें जो उसका प्रभाव वायुमण्डल पर अथवा साथियों पर भी पड़े। इसके लिए कोई विधि-विधान बनाओ। योग में बैठते तो हो लेकिन पॉवरफुल स्थिति में स्थित होकर बैठो जो शक्ति जमा हो और सारा दिन वह शक्ति काम में आये। ऐसे मास्टर सर्वशक्तिमान की स्थिति का अनुभव करो।
3. संगमयुग का विशेष खज़ाना है अतीन्द्रिय सुख, उस सुख का निरन्तर अनुभव करने की विधि है न्यारा और प्यारा बनना। तो चेक करो कि कहाँ तक हम न्यारे, प्यारे रहते हैं? हमारी यही शुभ भावना है कि ऐसा एक ग्रुप बनाओ जो एक दो की मदद से ऐसा वायुमण्डल बन जाए, जिससे आने वाले भी अनुभव करें कि यहाँ हर एक परमात्म प्यार में, अतीन्द्रिय सुख की अनुभूतियों में मग्न हैं।
4. अभ्यास करो संकल्पों को एक सेकण्ड में फुलस्टॉप लगाने की। एकाग्र होकर वतन में बैठ जाओ। फिर कर्म करते भी निरन्तर योगी होकर रहो। कम से कम रोज़ 6 घण्टा इस अभ्यास के लिए समय निकालो, दिनचर्या बनाओ। सारे दिन में 4 पहर, 6-6 घण्टे के होते हैं तो एक पहर का यह पुरुषार्थ हो। इसका हर एक कंगन बांधो।
5. स्वयं के संस्कारों को परिवर्तन करने के लिए हम सबको योग साधना ज़रूर करनी चाहिए। हम करेंगे तो हमें देख दूसरे करेंगे। तो अब दृढ़

संकल्प की शक्ति बढ़ाओ, तब मन्सा सेवा जो अन्तिम सेवा है, उसके प्रत्यक्ष प्रमाण दिखाई देंगे। इसी विधि से हम विकल्पों और विकर्मों से मुक्त हो सकेंगे अथवा क्रोधमुक्त आदि का जो पुरुषार्थ करते वह भी सहज हो जायेगा।

6. मुझे बाबा रोज़ कानों में कहता है—बच्ची एवररेडी हो? यही संकल्प आता कि अब टू लेट का बोर्ड लगने वाला है। यह भी दिखाई देता कि अब धर्मराज का पार्ट भी जल्द ही खुलने वाला है। एडवांस पार्टी भी जा चुकी है, उसकी भी तैयारियां पूरी हो चुकी हैं। सभी महारथियों को बाबा ने अचानक बुला लिया। अब हम सबको भी आखिर यहाँ कब तक रहना है! सभी दादियों की वानप्रस्थ अवस्था भी देख रहे हो।
7. ज्ञान सरोवर, शान्तिवन, बाबा के एसलम स्थान अथवा अन्तिम यात्रा के स्थान भी बनकर तैयार हो गये हैं। यह भी अन्त में सबको योग की किरणें देंगे। एसलम बनेंगे। तो रोज़ जैसे बाबा यह महावाक्य कानों में कहता है कि बच्चे अब अन्तिम यात्रा की तैयारी करो। अपने सर्व साथियों को तैयार करो।
8. अब सर्विस प्लैन की मीटिंग नहीं लेकिन अपनी ऊंची स्व-स्थिति बनाने की मीटिंग करो। ऐसी ऊंची स्थिति हो तो जो भी छोटी-मोटी बातें आती हैं, वह सब आपेही खत्म हो जायेंगी, इसके लिए उपराम रहो, वैरागी बनो। अन्डरग्राउण्ड चले जाओ। अलबेलेपन को दिल से त्याग दो। एकाग्रता का अभ्यास करो।
10. बाबा अब इशारा कर रहा है—बच्चे उपराम बनो। लगता है कि अब जीवन की यह अन्तिम यात्रा है। हमें यह फीलिंग रोज़ आती है। इसलिए ख्याल चलता कि अब बाबा के सभी ब्राह्मण बच्चे व्यर्थ से मुक्त हो उपराम बन जाएं। अपने संकल्प, श्वास समय को सफल कर लें, व्यर्थ नहीं गंवायें।

पवित्रता सर्व गुणों की जननी है,
यही सर्व श्रेष्ठ श्रृंगार है।

